~~इका~~ "इकाई - 4"
"b"

वाणिज्य मे मूल्यांकन →

वाणिज्य मे मूल्यांकन निम्नलिखित है -

मूल्यांकन का अर्थ →

शिक्षा मे मूल्यांकन का प्रयोग वर्तमान शताब्दी की घटना है। ग्रीन व अन्य का कथन है, " शिक्षा मे मूल्यांकन अभी एक नवीन धारणा है। इसका प्रयोग विद्यालय कार्यक्रम, शैक्षिक सामग्री, शिक्षक एवं बालकों की जाँच के लिए किया जाता है। इसके द्वारा शिक्षण के उद्देश्यों, सीखने के अनुभवों तथा ~~धार~~ परीक्षणों मे घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचना एवं परिभाषाओं को देखने से मूल्यांकन की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती है -

(1) मूल्यांकन एक प्रक्रिया है, जो निरन्तर चलती रहती है।
(2) मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है, शिक्षा के उद्देश्यो से घनिष्ठ ~~रूप~~ रूप से सम्बन्धित है।
(3) मूल्यांकन केवल निर्देश की उपलब्धि को ही नही मानता है वरन उसको उन्नत भी बनाता है।
(4) मूल्यांकन वर्णनात्मक होने के साथ -साथ संख्यात्मक भी होता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशि...

मूल्यांकन तथा मापन में अन्तर →

(1) मूल्यांकन मापन की अपेक्षा एक व्यापक पद है।
(2) मूल्यांकन मे मापन निहित है। मापन मूल्यांकन का समानार्थी नहीं है
(3) मापन एकांगी है जबकि मूल्यांकन बहुमुखी होता होता है।
(4) मापन मूल्यांकन प्रक्रिया का एक साधन है।

मूल्यांकन के सिद्धान्त →

मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तो पर ध्यान देना आवश्यक माना जाता है —

(1) छात्र : व्यवहार के किसी विशिष्ट पक्ष के मूल्यांकन के लिए उपयुक्त प्रविधि का चयन करे।
(2) शिक्षक मूल्यांकन प्रविधियों के समुचित प्रयोग के विषय मे उपयुक्त जानकारी रखे।
(3) शिक्षक मूल्यांकन को साध्य न मानकर साधन समझे।

मूल्यांकन के प्रयोजन

(1) निर्देशन मे सुधार करने के लिए अग्रसर करना
(2) निर्देशन के लिए आधार प्रदान करना।
(3) बालक के व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों की जाँच करना।
(4) उत्तम ढंग से सीखने के लिए प्रोत्साहन देना।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा → वस्तुनिष्ठ परीक्षाएँ वस्तुस्थिति पर आधारित होती हैं। इनमें उत्तर देने की छात्रों को स्वतन्त्रता नहीं होती है। छात्र अपनी इच्छा से चाहे जो कुछ, चाहे जिस प्रकार उत्तर नहीं दे सकते हैं। प्रत्येक प्रश्न का एक विशिष्ट उत्तर होता है। छात्र से वही विशिष्ट उत्तर देने की आशा की जाती है यदि छात्र का उत्तर उस विशिष्ट उत्तर से भिन्न होता है तो वह गलत समझा जाता है। इस कारण भी इन्हें विशिष्टोत्तरात्मक परीक्षाएँ भी कहते हैं। इनकी दूसरी विशेषता होती है। इनके उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त प्रायः एक शब्द में होते हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा के गुण → वस्तुनिष्ठ परीक्षा में निम्नांकित गुण होते हैं-

1. यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर फैली होती है।
2. उत्तर देना सरल होता है।
3. उत्तरों पर अंक प्रदान करना सरल होता है।
4. अधिक विश्वसनीय होती है।

वस्तुनिष्ठ ~~परि~~ परीक्षा के दोष →

1. प्रश्न-पत्र निर्माण में बहुत समय व श्रम लगता है।
2. इनमें नकल करने के अवसर बढ़ जाते हैं।
3. इनमें समय तत्व का बड़ा ध्यान पड़ता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रकार → वस्तुनिष्ठ परीक्षा

(1) मिलान पद प्रश्न → इस प्रकार के प्रश्न उस समय अत्यन्त सहायक होते है जब हम किसी विशिष्ट सूचना की परीक्षा लेना चाहते और जहाँ पर पुनः पुनः स्मरण की अवश्यकता नही पड़ती है। इनके द्वारा दो तथ्यो मे सम्बन्ध स्थापित करने की योग्यता तथा तथ्यो का वर्गीकरण करने की योग्यता की जाँच भी भली प्रकार हो सकती है। इन प्रश्नो मे कुछ सम्बन्धित तथ्यो को दो समूहो मे रखा जाता है। एक समूह जो का त्यो दिया जाता है। दूसरे से इस अव्यवस्थित समूह को व्यवस्थित करने को कहा जाता है नीचे एक उदाहरण प्रस्तुत है।

निर्देश → नीचे कुछ स्थानो के नाम दिये गये है इनके सामने अव्यवस्थित रूप मे इन स्थानो पर प्रसिद्ध कारखानो के नाम दिये गये है। प्रत्येक स्थान से सम्बद्ध कारखाने का नाम व्यवस्थित रूप मे लिखिए —

अ →	धौलपुर	सीमेंट
ब →	चित्तौड़गढ़	चीनी
स →	जयपुर	काँच
द →	कोटा	खाद
य →	भोपाल, सागर	सूती कपड़ा

मीरा ... शिक्षण एवं ... पाण्डुपुर, ता..., बां...

(2) रिक्त स्थानो की पूर्ति करना → इस प्रकार के प्रश्नो के द्वारा एक विशिष्ट सूचना सम्बन्धित जाँच कि जाती है

और प्रमुख रूप से किसी विशिष्ट नाम, तारीख, संख्या, स्थान का ज्ञान इस प्रश्नों के द्वारा पूछा जाता है। नीचे इस प्रकार के प्रश्नों के द्वारा पूछा जाता है। नीचे इस प्रकार के प्रश्नों का उदाहरण प्रस्तुत है।

निर्देश → नीचे दिये गये वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द लिख कर करो —

① बैंकों का राष्ट्रीयकरण ..... में हुआ था।
② निकृष्ट मुद्रा परिचलन नियम को ..... ने प्रतिपादित किया था।
③ भारत में वाणिज्य मण्डी ..... है।

③ सत्यासत्य प्रश्न → इस प्रकार के प्रश्न सबसे अधिक मात्रा में प्रयोग किये जाते हैं। तकनीकि दृष्टि से इस प्रकार के प्रश्न सर्वोत्तम माने जाते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों के अन्तर्गत कुछ सत्य और कुछ असत्य तथ्य दिये होते हैं। परीक्षा के सम्मुख 'सत्य - असत्य' लिख दिया जाता है। दोनों को सत्य के आगे सत्य व असत्य के आगे असत्य लिखना होता है।

निर्देश → नीचे कुछ तथ्य दिये जा रहे हैं उन पर असत्य या सत्य पर निशान लगाइये —

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, कानपुर

① लेजर से तत्पट तैयार किया जाता है। (सत्य / असत्य)
② मुद्रा छापने का कार्य स्वीकार करती है। (सत्य / असत्य)
③ फुटकर व्यापारी अनेक वस्तुओं का व्यापार कर सकते हैं। (सत्य / असत्य)

(4) बहुचयनात्मक प्रश्न → इस प्रकार की परीक्षाओं मे कुछ प्रश्न दिये होते है तथा उनके सम्मुख ही कई शब्द दिये होते है। इन शब्दों मे एक शब्द सही उत्तर होता है, बाकी गलत। इनमें से सही उत्तर वाले शब्दों को रेखांकित करने को कहा जाता है। इस प्रकार के कुछ उदाहरण आगे दिये गये है —

निर्देश → नीचे कुछ प्रश्न दिए गये है। उनके सामने कुछ उत्तर है जिनमें एक सही उत्तर है, बाकी सब गलत है। सही उत्तर वाले शब्दो के नीचे रेखा खींच दीजिए —

(1) माल अग्नि से नष्ट हो गया। इसका लेखा किया जायेगा।

(a) विक्रय बही मे, (b) मुख्य जर्नल मे,
(c) विक्रय वापसी बही मे, (d) क्रय वापसी बही मे
(e) क्रय बही मे,

(2) मुख्य जर्नल मे प्रारम्भिक प्रविष्टि की जाती है माल के —

(a) उधार क्रय की, (b) नकद विक्रय की,
(c) क्रय वापसी की, (d) अग्नि से क्षतिग्रस्त होजाने
(e) विक्रय वापसी की,

(3) बही खातों की गणितीय शुद्धता की जाँच करने हेतु बनाया जाता है —

(a) चिट्ठा, (b) व्यापार खाता,
(c) तलपट, (d) लाभ – हानि खाता,
(e) उचन्त खाता

(5) सरल स्मरण प्रश्न → इस प्रकार की परीक्षा में ऐसे प्रश्न पूछे जाते पूछे जाते हैं जिनका उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त साधारणतया एक या दो शब्दों में होता है। नीचे इस प्रकार के प्रश्नों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

(1) बही खाते ही दोहरी लेखा पद्धति की अन्तिम अवस्था का नाम क्या है?
(2) चेक कहाँ भुनाया जाता है?
(3) चेक में राशि कितनी बार लिखी जाती है?
(4) एक व्यापारी जो सहायक बहियाँ नहीं रखता वह खाते किस पुस्तक से बनायेगा?

20/09/20

प्राचार्य
मौनी मैमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया